मन चित बुध अहंमेव अवला, करूं जोरावर जेर।
हवे हार्‌या सर्वे जीताडी, फेरवुं ते सवले फेर।। २७ ।।

मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार जो उलटे चल रहे थे, उनको माया की तरफ से हटाकर धनी के रास्ते के लिए बलवान बना दूंगी। अब जो हारे बैठे हैं उन सबको सीधा ज्ञान देकर जिता दूंगी।

चोर टाली करूं वोलावो, सुख सीतल करूं संसार।
विध विधना सुख दऊं विगतें, कांई रासतणा आवार।। २८ ।।

गुण, अंग, इन्द्रिय जो धनी के कार्यों में काम चोर हैं, इनको वाणी से पलट कर सीधा कर दूंगी और संसार के झंझट मिटाकर सब संसार को अखण्ड सुख दूंगी। इस बार जागनी रास के अनेक प्रकार के सुख दूंगी।

कोइक दिन साथ मोहना जलमां, लेहेर विना पछटाणा।
वासना घणूं वल्लभ मूने, न सहूंते मुख करमाणा।। २९ ।।

कुछ दिन सुन्दरसाथ वाणी के ज्ञान के बिना भवसागर में डूबते रहे। यह परमधाम की आत्माएं मुझे बहुत प्यारी हैं। इनके कुम्हलाए (मुरझाए) मुख को मैं देख भी नहीं सकती।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ३५४ ॥

प्रकरण हांसीनूं

मारा साथ सनमंधी चेतियो, ए हांसीनों छे ठाम।
आप वालो घर विसरी, हवे जागी भूलो कां आम।। १ ।।

हे मेरे सम्बन्धी सुन्दरसाथजी! सावधान! यह ठिकाना (स्थान) ही हांसी (हंसी) का है। इसमें अपने आपको, घर को और धनी को भूल गए थे। अब जागकर भी इस तरह क्यों भूलते हो?

साथजी तमने रामत, जोयानो छे ख्याल।
जेनूं मूल नहीं तेणे बांधिया, ए हांसीनो छे हवाल।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुमको खेल देखने की इच्छा पैदा हुई थी। माया जिसका मूल ही नहीं है, उसने तुम्हें बांध रखा है। (मान-सम्मान) यह हांसी (हंसी) का हाल है।

तमे मांगी रामत विनोदनी, तेणे विलस्या तमारा मन।
वात वालाजीनी विसरी, जे कह्या मूल वचन।। ३ ।।

तुमने तो विनोद के लिए (आनन्द के लिए) खेल मांगा था। इसने तुम्हारे मन को अपनी तरफ फिरा रखा है। अपने धनी की बात जो परमधाम में कही थी, वह भूल गए हो।

गूंथो जाली दोरी विना, आप बांधो मांहें अंग।
अंग विना तमे तरफडो, कांई ए रामतना रंग।। ४ ।।

माया, जाहिर में कोई डोरी नहीं है। फिर भी इसका जाल गूंथ कर अपने को बांध रहे हो। तुम्हारे यहां तन भी नहीं हैं। बिना तन के ही तड़प रहे हो। यही खेल का रूप है।

Nijanand App

आप बंधाणा आपसूं, एणे कोहेडे अंधेर।
चढ्यूं अमल जाणे जेहेरनूं, फरे ते मांहें फेर।।५।।

इस अंधेरे कोहरे में तुम अपने आप बंधे हो। ऐसा जहरीला अमल (असर) चढ़ा लगता है। यह अन्दर ही अन्दर घुमा रहा है।

अमल चढ्यूं केम जाणिए, कोई आथडे कोई पडे।
कोई मांहें जागी करी, बांहें ग्रही पगथी चढे।।६।।

कैसे माना जाए, इसका नशा चढ़ा है? जब तक कोई उठे या गिरे नहीं, कोई जाग करके बाजू पकड़कर कोई चलाए नहीं?

एक पडे पगथी थकी, तेहेनों बीजी ते साहे हाथ।
खाए ते बंने गडथला, कांई रामत ए अख्यात।।७।।

एक सीढ़ी से गिर जाए और दूसरा उसकी सहायता के लिए हाथ पकड़े, तो दोनों ही एक-दूसरे को पकड़कर गिर जाते हैं। इस तरह खेल का हाल है।

कोई पडे पगथी विना, तेहेने बीजी ते झालवा जाय।
पडे ते बंने मोंहों भरे, ए हांसी एमज थाय।।८।।

कोई सीढ़ी बिना गिर जाते हैं। कोई दूसरा उठाने जाता है, तो दोनों ही मुंह के बल गिर जाते हैं। इस तरह हंसी होती है।

भोम विना ओठूं लिए, अने चरण विना उजाय।
जल विना भवसागर, तेहेमां गलचुवा खाय।।९।।

हे साथजी! यह तो तुमने दुनियां के जाहिरी नशेबाजों की हालत देखी है। अब अपनी तरफ देखो। यह माया का सागर सपने का है। कोई भूमि ऐसी नहीं जिससे तुम्हें ठोकर लगे। तुम्हारे मूल तन परमधाम में हैं। यहां पैर के बिना ही दौड़ रहे हो। यहां कोई हकीकत का जल नहीं जिसमें डूबोगे। यह सपने का भवसागर है, इसलिए सावचेत (सावधान) हो।

अंत्रीख जुओ ऊभियो, हाथ विना हथियार।
निद्रा छे अति जागते, पिंड विना आकार।।१०।।

देखो, कैसे बीच में लटके पड़े हो? बिना हाथ के हथियार लिए हो। बिल्कुल जागते हुए भी नींद में हो। बिना आकार के अपना तन लिए बैठे हो, अर्थात् इस झूठे मान-अभिमान को छोड़ दो। यह सब मिथ्या है।

एक नवी कोई आवी मले, ते कहावे आप अजाण।
कोई मांहें मोटी थई, समझावे सुजाण।।११।।

एक कोई नया साथी हमसे आकर मिलता है, तो वह अपने आप कहता है, मैं तो अज्ञानी हूं। उनमें से कोई बड़ा ज्ञानी बनकर समझाने लगता है कि हम सब समझते हैं।

वचन करडा कोई कहे, केने खंडनी न खमाय।
पछे कलपे बंने कलकले, एने अमल एम लई जाय।।१२।।

कोई सख्त (कठोर) वचन कहता है तो दूसरे से खण्डनी सहन नहीं होती। पीछे दोनों बिलख-बिलख कर रोते हैं। इस तरह का यह संसार का नशा है।

Nijanand App

खंडी खांडी रडी रडावी, दुख जगवतां दीठा घणा।
जाग्या पछी ज्यारे जोइए, त्यारे बंनेमां नहीं मणा।। १३ ।।

खण्डनी करके किसी को कुचलते हैं। रुलाकर दोनों को दुःख होता है। होश में आकर जब देखते हैं तो दोनों में कोई कम नहीं है, यह दिखाई पड़ता है।

साथ मांहें हांसी थासे, रस रामत एणी रंग।
पूर विना तणाणियों, कोई आडी थाय अभंग।। १४ ।।

जो सुन्दरसाथ, बिना माया के माया में बहे जा रहे थे, अर्थात् अपने धनी का जो विश्वास छोड़े बैठे थे और माया में खिंचे जा रहे थे, वह सुन्दरसाथ अखण्ड वाणी से जागृत होकर आपस में खुशियां मनाएंगे। ऐसी जागनी रास की लीला होगी।

हरखे हांसी हेतमां, करसे साथ कलोल।
माया मांगी ते जोई जोपे, रामत झलाबोल।। १५ ।।

सुन्दरसाथ ने जो माया मांगी थी, उसमें अच्छी तरह से डूबकर देख लिया। अब जागृत होने पर बड़े खुश होंगे और आपस में विनोद की बातें (खेल की बातें) करेंगे।

वृख ऊभो मूल विना, तेहेनूं फल वांछे सहु कोय।
वली वली लेवा दोडहीं, ए हांसी एणी पेरे होय।। १६ ।।

यह ब्रह्माण्ड बिना जड़ के खड़ा है और इसका फल सब चाहते हैं। बार-बार फल लेने दौड़ते हैं। फल होता ही नहीं तो कहां से मिले? यही हांसी (हंसी) का खेल है।

अछता बंध छूटे नहीं, पेरे पेरे छोडे तोहे।
ए स्वांग सहु मायातणो, साथ बांध्यो रामत जोए।। १७ ।।

न दिखने वाले माया के बंध (रिश्तेदारियां और इच्छाएं) छूटते नहीं हैं। पल्ला तो बार-बार छुड़ाते हैं तो भी नहीं छूटता। ऐसा माया का यह ढोंग है। सुन्दरसाथ ऐसे खेल को देखने के लिए फंस गया है।

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ३७१ ॥

जागणीनूं प्रकरण

हवे जागी जुओ मारा साथजी, ए छे आपण जोग।
त्रण लीला चौथी घरतणी, चारेनों एहेमां भोग।। १ ।।

हे साथजी! जागृत होकर देखो। यह खेल हमारे देखने लायक है। ब्रज, रास, नौतनपुरी की तीन लीला तथा चौथे घर के सुख की लीला—इन चारों का आनन्द इस जागनी लीला में मिलता है।

कह्या न जाय सुख जागणीना, सत ठोरना सनेह।
आ भोमना जेहेवुं केहेवाय, कांइक प्रकासूं तेह।। २ ।।

जागनी के सुख का वर्णन कहने में नहीं आता, क्योंकि इसमें अखण्ड परमधाम का प्यार मिलता है। यह भूमि जैसी कही जाती है, उसका थोड़ा वर्णन करती हूं।

Nijanand App